दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

मई – 2009

समय –10.00 बजे से 1.00 तक ।

नांक: 29/05/2009

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

एम.ए. प्रथम वर्ष परीक्षा

विषय–हिंदी, प्रश्न पत्र–2

शीर्षक :अधुनिक काव्य

मय – 3 घंटे

पूर्णांक : 75

चना : 1. खंड–क से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

2.खंड ख अनिवार्य है ।

खंड –क: ***4x10=40***

महाकाव्य के तत्वों के आधार पर कामायनी की समीक्षा कीजिए ।

राम की शक्ति पूजा की कथावस्तु का सोदाहरण वर्णन कीजिए ।

परिवर्तन कविता के काव्य सौंदर्य पर प्रकाश डालिए ।

अज़ेय का परिचय देते हुए असाध्य वीणा के कथ्य पर प्रकाश डालिए ।

धूमिल की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए –

) लज्जा सर्ग का प्रतिपाद्य

) कुकुरमुत्ता का व्यंग्य

) धूमिल की काव्य–भाषा

) साकेत का काव्य–सौंदर्य

खंड–ख ***5x7=35***

नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

) ओ चिंता की पहली रेखा,अरी विश्व–वन की व्याली,
ज्वालामुखी स्फ़ोट के भीतर प्रथम कंप सी मतवाली !
हे अभाव की चपल बालिके,री ललाट की खल लेखा !
हरी–भरी–सी दौड–धूप,ओ जल–माया की चल–रेखा ।

अथवा

सुख केवल सुख का वह संग्रह,केंद्रीभूत हुआ इतना,
छायापथ में नव तुषार का सघन मिलन होता जितना ।
सबकुछ थे स्वायत्त, विश्व के बल, वैभव,आनंद अपार,
उद्वेलित लहरों–सा होता उस समृद्धि का सुख संचार ।।

(ख)

है अमानिशा उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान स्तब्ध है पवन चार
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भूधर ज्यों ध्यानमग्न,केवल जलती मशाल ।

अथवा

देखते हुए निष्पलक याद आया उपवन
विदेह का,–प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन ।
नयनों का नयनों से गोपन–प्रिय संभाषण,
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान पतन ।

(ग)

अहे निष्ठुर परिवर्तन ?
तुम्हारा ही ताण्डव–नर्तन
विश्व का करुण–विवर्तन
तुम्हारा ही नयानोन्मीलन
निखिल उत्थान पतन ।

अथवा

रुधिर के हैं जगती के प्रातः
चितानल के ये सायंकाल
शून्य निःश्वासों के आकाश
आँसुओं के ये सिंधु विशाल ।

(घ)

काल का अकरुण भृकुटि–विलास
तुम्हारा ही परिहास
विश्व का अश्रुपूर्ण इतिहास
तुम्हारा ही इतिहास

अथवा

किंतु हम हैं द्वीप । हम धारा नहीं हैं
स्थिर समर्पण है हमारा । हम सदा से द्वीप हैं–स्रोत स्विनी के
किंतु हम बहते नहीं हैं । क्योंकि बहना रेत होना है
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं ।
पैर उखडेंगे । प्लवन होगा । ढहेंगे । सहेंगे ।बह जायेंगे ।
और फ़िर हम चूर्ण होकर भी कभी क्या धार बन सकते ?
रेत बनकर हम सलिल को तनिक गँदला ही करेंगे ।

पर उस स्पंदित सन्नाटे में
मौन प्रियंवद साथ रहा था वीणा –
नहीं,स्वयं अपने को शोध रहा था
सघन निविड़ में वह अपने को
सौंप रहा था उसी किरीटी तरु को ।

अथवा

ऐब ऐसा कि हिटलर का नाती है
इसे बाँद्धो,उसे काट्टो,हियाँ ठ्ठोक्को,वहाँ पीट्टो
घिश्शा दो,अइशा चमकाओ जूते को ऐना बनाओ
..... ओफ़ ! बडी गर्मी है रूमाल से हवा
करता है , मौसम के नाम पर बिसूरत है
सडक पर 'आतियों जातियों'को
बानर की तरह घूरता है
गरज यह कि घण्टे-भर खटवाता है
मगर नामा देते वक्त
साफ़ 'नट' जाता है
'शरीफ़ों को लूटते हो' वह गुर्राता है ।

******